

नारी शक्ति को प्रणाम

नवभारत टीम

- विरेन्द्र वर्मा
- धर्मेन्द्र चौहान
- शैलेन्द्र कश्यप

शिक्षा युवाओं के लिए सबसे प्रभावी हथियार



ग्रामीण पुलिस अधीक्षक यांगचेन डोलकर भुटिया ने बताया कि भारतीय पुलिस सेवा में आने की प्रेरणा उन्हें देश की पहली महिला आईपीएस अधिकारी किरण बेदी के व्यक्तित्व और कार्यशैली से मिली। उन्होंने माता-पिता ने बचपन से ही आत्मविश्वास दिया कि वे अपने निर्णय स्वयं लें और उनकी जिम्मेदारी भी निभाएं। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को साहसी और मजबूत बनाते हुए कहा कि जागरूकता की कमी के कारण वे कई समस्याओं का सामना करती हैं, जिन्हें दूर करने के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। साथ ही उन्होंने विश्वास जताया कि आने वाले समय में पुलिस विभाग में महिलाओं की भागीदारी और बढ़ेगी। वहीं युवाओं के लिए शिक्षा को बताया सबसे बड़ा और प्रभावी हथियार। एसपी भुटिया बताती हैं कि उनका लक्ष्य सिविल सेवा में आना था। पुलिस सेवा में आना एक तरह से संयोग रहा। सेवा आर्बटन के समय जब उन्हें भारतीय पुलिस सेवा मिली तो उन्होंने इस क्षेत्र को समझना शुरू किया। उनके अनुसार यह बेहद सम्मानजनक और समाज की सेवा का अवसर देने वाला पेशा है। उन्होंने बताया कि उनके परिवार में दूर-दूर तक कोई पुलिस या सिविल सेवा में नहीं था। वे मूल रूप से सिक्किम से हैं, उनके माता-पिता सरकारी सेवा में जरूर थे, लेकिन केंद्रीय सेवाओं में नहीं। माता-पिता ने हमेशा उन्हें आत्मविश्वास दिया कि अपने निर्णय स्वयं लें और उस पर पूरी जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़ें। महिला अधिकारियों के सामने आने वाली चुनौतियों पर उन्होंने कहा कि महिला और पुरुष अधिकारियों के बीच ज्यादा अंतर नहीं है। लेकिन परिवार और करियर के बीच संतुलन बनाना महिलाओं के लिए अपेक्षाकृत कठिन होता है। समाज की अपेक्षाएं आज भी महिलाओं से घर और परिवार की जिम्मेदारी अधिक निभाने की रहती हैं, जबकि महिलाएं भी पुरुषों की तरह नौकरी और जिम्मेदारियां निभाती हैं।

ग्रामीण पुलिस अधीक्षक यांगचेन डोलकर भुटिया ने बताया कि भारतीय पुलिस सेवा में आने की प्रेरणा उन्हें देश की पहली महिला आईपीएस अधिकारी किरण बेदी के व्यक्तित्व और कार्यशैली से मिली। उन्होंने माता-पिता ने बचपन से ही आत्मविश्वास दिया कि वे अपने निर्णय स्वयं लें और उनकी जिम्मेदारी भी निभाएं। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को साहसी और मजबूत बनाते हुए कहा कि जागरूकता की कमी के कारण वे कई समस्याओं का सामना करती हैं, जिन्हें दूर करने के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। साथ ही उन्होंने विश्वास जताया कि आने वाले समय में पुलिस विभाग में महिलाओं की भागीदारी और बढ़ेगी। वहीं युवाओं के लिए शिक्षा को बताया सबसे बड़ा और प्रभावी हथियार। एसपी भुटिया बताती हैं कि उनका लक्ष्य सिविल सेवा में आना था। पुलिस सेवा में आना एक तरह से संयोग रहा। सेवा आर्बटन के समय जब उन्हें भारतीय पुलिस सेवा मिली तो उन्होंने इस क्षेत्र को समझना शुरू किया। उनके अनुसार यह बेहद सम्मानजनक और समाज की सेवा का अवसर देने वाला पेशा है। उन्होंने बताया कि उनके परिवार में दूर-दूर तक कोई पुलिस या सिविल सेवा में नहीं था। वे मूल रूप से सिक्किम से हैं, उनके माता-पिता सरकारी सेवा में जरूर थे, लेकिन केंद्रीय सेवाओं में नहीं। माता-पिता ने हमेशा उन्हें आत्मविश्वास दिया कि अपने निर्णय स्वयं लें और उस पर पूरी जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़ें। महिला अधिकारियों के सामने आने वाली चुनौतियों पर उन्होंने कहा कि महिला और पुरुष अधिकारियों के बीच ज्यादा अंतर नहीं है। लेकिन परिवार और करियर के बीच संतुलन बनाना महिलाओं के लिए अपेक्षाकृत कठिन होता है। समाज की अपेक्षाएं आज भी महिलाओं से घर और परिवार की जिम्मेदारी अधिक निभाने की रहती हैं, जबकि महिलाएं भी पुरुषों की तरह नौकरी और जिम्मेदारियां निभाती हैं।

व्यक्ति का भविष्य उसके निर्णयों पर

युवाओं और विशेषकर युवतियों के लिए संदेश देते हुए उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति का भविष्य उसके निर्णयों पर निर्भर करता है। यदि युवा शिक्षा को प्राथमिकता देते हैं और अपने लक्ष्य के प्रति मेहनत करते हैं, तो वे जीवन में बेहतर अवसर हासिल कर सकते हैं। उनके अनुसार शिक्षा ही वह सबसे बड़ा साधन है, जो युवाओं को अपने भविष्य का रास्ता चुनने की ताकत देता है।

महिला दिवस एक दिवस नहीं



महिला दिवस केवल एक दिवस या तिथि नहीं, यह हर सुबह की पहली किरण है। यह माँ की ममता की रूपमा है, यह बेटी की हँसी का स्यंदन है। एक दिन के फूलों से क्या होगा, हर दिन सम्मान जरूरी है। उसके सपनों को पंख मिलें, जब सोच हमारी पूरी हो।

वह घर की नींव, वह जग की शान, वह श्रम, साहस और त्याग की पहचान। कभी दुर्गा, कभी सरस्वती, कभी सीता-सी शैव्यांन।

क्यों सीमित हो उसका उत्सव सिर्फ एक तारीख के दायरे में? जब हर दिन उसकी मेहनत चमके जीवन के हर उजियारे में।

उसे सम्मान, सुरक्षा, अवसर दें, सपनों को खुला आसमान दें। महिला दिवस बस सच्चा होगा, जब हर दिन उसे पहचान दें।

आओ प्रण लें मन से हम नारी का मान बढ़ाएंगे। हर दिन होगा महिला दिवस, जब दौरा बराबरी का जलाएंगे।

- डॉ अर्चना श्रीवास्तव 'ओमप्रिया'

महिलाएं शहर व देश हित में काम करें



मैंने मेरे नानाजी से प्रेरित होकर वकालत क्षेत्र को चुना है। उनकी इच्छा थी कि घर से कोई एक वकील बने। मैं खड्का में रहती थी और कलेक्टर ऑफिस में आते-जाते वकीलों को देखती थी। उसी समय मन में आया कि मैं वकील बनूंगी और कक्षा 9वीं में तय कर लिया था कि वकील बनना है। नानाजी वकालत की पढ़ाई पूरी नहीं कर पाए थे और उनका सपना था कि परिवार से कोई कानून के क्षेत्र में जाए। उनके सपने को मैंने पूरा किया।

यह कहना है शहर के प्रथम महिला नागरिक जूही पुष्पमित्र भागवत का। जूही भागवत कहती हैं कि महिलाओं, कमजोर और बेसहारा लोगों को कानून के जरिए मदद दिलाने की कोशिश के तहत ही मैंने वकालत की पढ़ाई की है। मुझे एक किस्सा याद है कि एलएलएम के दौरान एक व्यक्ति को वेक बाउंस के मामले में सजा हो गई थी और उनकी पत्नी का भी निधन हो गया। उनके तीन बच्चे थे और मैंने एलएलएम के पढ़ाई के दौरान ही उनकी अपनी जेब से 25 हजार रुपए लगाकर न सिर्फ मदद की, बल्कि उनको दोष मुक्त भी करवाया। इस बात का मुझे गर्व भी है और उनके बड़े बेटे ने मेरे पैसों भी थोड़े थोड़े करके चुकाए। बाद मैंने ही मना कर दिया कि रहने दो और अपनी जिंदगी को बनाओ।

इरादे मजबूत करके आगे बढ़ो
मेरा आज की महिलाओं और लड़कियों से कहना है कि अपने इरादे मजबूत करके आगे बढ़ो। स्वयं जिम्मेदार बनो और शहर एवं देश हित में पर्यावरण और धर्म के प्रति संवेदनशील रहकर काम करने की सीख परिवार के सदस्यों को भी दे और अन्य महिलाओं व सखियों को भी जागरूक करें।



हर महिला अपने व्यक्तित्व को मजबूत बनाए
डॉ. ध्वनि शर्मा का जन्म जुनागढ़, गुजरात में हुआ और पढ़ाई आणंद, गुजरात में हुई। आपने बाँयोटेक्नोलॉजी में पीएचडी किया एवं एन.टी. पटेल साइंस कॉलेज, वल्लभ विद्यानगर आणंद में प्राध्यापिका रही। बचपन से ही पढ़ाई एवं वाकपटुता में माहिर कॉलेज में मिस परसनेलटी रही एवं एनसीसी 'सी' सर्टिफिकेट 'ए' ग्रेड फॉर गुजरात गर्ल्स बटालियन में सम्मानित हुईं। आप गुजरात आणंद जिला भारतीय जनता पार्टी की मंत्री रही, गुजरात प्रदेश मंत्री रही। बड़ोदरा लोकसभा की प्रभारी रही। फिर भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय मंत्री एवं दिल्ली-हरियाणा, कर्नाटक का

ग्रामीण महिलाओं को जोड़ा स्वरोजगार से



नेहा मीना 2014 बैच की एक प्रमुख महिला आईएस अधिकारी हैं, जो मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले की कलेक्टर के रूप में अपनी उत्कृष्ट सेवाओं और नवाचारों के लिए जानी जाती हैं। नेहा मीना ने करियर की शुरुआत धार में असिस्टेंट कलेक्टर के रूप में की थी। वह बागल में एसडीएम और इंदौर में जिला पंचायत सीईओ भी रही हैं। झाबुआ से पहले वे नीमच में अपर कलेक्टर एडीएम थीं। आईएस नेहा मीना को पहले भी उनकी प्रशासनिक कामों के लिए सम्मानित किया जा चुका है। उन्हें 25 जनवरी को 15वें राष्ट्रीय जनता दिवस के दौरान राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से बेस्ट इलेक्टरल प्रैक्टिस अवॉर्ड मिला था। इसके अलावा उन्हें नदी संरक्षण

पहल के लिए केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय से वेस्ट मैनेजमेंट अवॉर्ड 2020 और योरल नदी के पुनरुद्धार के लिए राष्ट्रीय जल पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। इसके अलावा नीमच के पूर्व एडिशनल कलेक्टर के रूप में उन्हें भूमि अभिलेखों के आधुनिकीकरण और गांव के नक्शे और अभिलेखागार को डिजिटल बनाने में उनके योगदान के लिए 18 जुलाई 2023 को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से लैंड इन्वेल प्लेनिटिम अवॉर्ड मिल चुका है। एक अभिनेता और डेटा-ड्रिवन अभियान है, जिसे प्रधानमंत्री उत्कृष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। कलेक्टर नेहा मीना के मार्गदर्शन में यह पहल, विशेषकर उन बच्चों के लिए परधान साबित हो रही है जिनके माता-पिता काम के लिए पलायन करते हैं। इन्दौर जिले में सीईओ जिला पंचायत रहते हुए ग्रामीण महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ा, झाबुआ कलेक्टर के रूप में वह जिले में शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण और सरकारी योजनाओं को जमीनी स्तर तक पहुंचाने के लिए सक्रिय रूप से काम कर रही हैं।

सशक्त बनकर देश की प्रगति में भागीदारी करें
संदेश देते हुए नेहा मीना ने कहा कि महिलाएं समाज की शक्ति हैं। शिक्षा, आत्मविश्वास और अवसरों से हर महिला सशक्त बनकर देश की प्रगति में भागीदारी करें।

संस्कार, शिक्षा और आत्मरक्षा, सशक्त नारी की सच्ची पहचान

वर्षों से कमजोर और बेसहारा, आदिवासी महिलाओं के लिए काम कर रही ईवा वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन की संचालक भारती मंडोले कहती हैं कि आज समाज में विकृत मानसिकता और संवेदनहीनता बहुत ज्यादा फैल रही है। इसका परिणाम है कि एक सुबह समाचार देखने में आता है कि मात्र दस दिन की नवजात बच्ची को एक लाख बीस हजार रुपए में बेचने का प्रयास किया जा रहा है, तो मन व्यथित हो उठा। यह समाज की विकृत मानसिकता और संवेदनहीनता को दर्शाता है। बच्चियों और महिलाओं के साथ होने वाले दुष्कर्म समाज के नैतिक पतन की ओर इशारा करते हैं।



स्वावलंबन जरूरी
सशक्त समाज के संकल्प के साथ महिला दिवस पर ईवा की ओर से सभी माताओं और बहनों से अपील है कि वे अपनी बेटियों को केवल अच्छे संस्कार ही नहीं, बल्कि आर्थिक स्वावलंबन का पाठ भी पढ़ाए और बेटियों को परते के साथ कराटे भी सिखाएं।

ईवा वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन 2010 से महिला उत्थान और सशक्तिकरण के क्षेत्र में सतत कार्यरत है। संस्था का मुख्य उद्देश्य महिलाओं एवं बालिकाओं को आत्मनिर्भर बनाना है, ताकि वे आत्मसम्मान के साथ अपने जीवन जी सकें। संस्था द्वारा अभी तक 10,000 से अधिक महिलाओं और बालिकाओं को विविध प्रशिक्षण प्रदान किए जा चुके हैं। विशेष रूप से अल्पशिक्षित एवं आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं को रुचि अनुसार सिलाई, ब्यूटी पार्लर प्रशिक्षण, हस्तशिल्प तथा गृह उद्योग के कार्य सिखाए जाते हैं, जिससे स्वरोजगार में सहयोग मिलता है। साथ ही 12वीं या उससे अधिक शिक्षित लड़कियों को विशेष व्यावसायिक प्रशिक्षण के तहत बेसिक कंप्यूटर प्रशिक्षण, टैली तथा पीजीडीसीए पाठ्यक्रम सिखाए जाते हैं। ईवा वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन का मिशन महिलाओं में आत्मविश्वास, जागरूकता और स्वाभिमान का विकास करना भी है।

महिलाओं को अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए

मध्यप्रदेश जेल विभाग की वरिष्ठ अधिकारी अलका सोनकर प्रदेश की पहली महिला सेंट्रल जेल सुपरिंटेंडेंट हैं। उन्होंने लगभग दो दशक के प्रशासनिक अनुभव के दौरान सागर, जबलपुर, उज्जैन और इंदौर सहित कई केंद्रीय जेलों में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां संभाली हैं। जेल प्रशासन में रहते हुए उन्होंने बंदियों की शिक्षा, कौशल विकास और मानसिक सुधार से जुड़ी कई पहल शुरू कीं। महिलाओं के लिए रोजगारपरक प्रशिक्षण, जेल वाणी रेडियो और सांस्कृतिक गतिविधियों जैसे नवाचार उनके कार्यकाल की विशेष पहचान रहे हैं।

कोई महिला या पुरुष प्रधान पद नहीं है, यह पूरी तरह जिम्मेदारी वाला पद है। जब मैंने इस विभाग में कदम रखा तो समाज में यह संदेश गया कि महिलाएं भी इस क्षेत्र में काम कर सकती हैं। मेरे बाद कई लड़कियां इस सेवा में आईं, यह अपने आप में एक सकारात्मक बदलाव है। मुझे हमेशा लगा कि कानून व्यवस्था से जुड़ी सेवा के माध्यम से समाज में सुधार लाने का अवसर मिलता है, यही मेरे लिए सबसे बड़ी प्रेरणा रही। उन्होंने बताया

कि शुरुआत में सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि जेल जैसी सख्त व्यवस्था में महिला अधिकारी के रूप में खुद को साबित करना पड़ता है। लोगों की यह धारणा थी कि यह काम महिलाओं के लिए कठिन होगा। लेकिन समय के साथ काम के माध्यम से यह साबित हुआ कि यदि दृढ़ता और अनुशासन हो तो कोई भी जिम्मेदारी निभाई जा सकती है। उन्होंने आगे कहा कि सबसे जरूरी है कि महिलाओं को अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए, जब महिलाएं नेतृत्व की भूमिका में आती हैं तो वे संवेदनशीलता और अनुशासन दोनों के साथ काम करती हैं। समाज में भी यह सोच विकसित होनी चाहिए प्रशासनिक या सुरक्षा से जुड़े क्षेत्रों में महिलाएं उतनी ही सक्षम हैं जितने पुरुष।



इंदौर के राजेंद्र नगर क्षेत्र की एसपी निधि सक्सेना अनुशासित और परिणाम आधारित पुलिसिंग के लिए जानी जाती हैं। उनके नेतृत्व में क्षेत्र में कानून-व्यवस्था बनाए रखने के साथ महिला सुरक्षा को लेकर विशेष पहल की जा रही है। जनसंवाद, मोहल्ला मीटिंग और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से आमजन को पुलिस से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है, वहीं महिलाओं और किशोरियों को आत्मरक्षा, हेल्पलाइन नंबरों और उनके कानूनी अधिकारों के प्रति भी जागरूक किया जा रहा है। उनका मानना है कि महिलाओं के आत्मनिर्भर और जागरूक होने से समाज में सुरक्षा का माहौल और मजबूत होता है। एसपी निधि सक्सेना कहती हैं कि पुलिस वर्दी केवल कानून लागू करने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज में भरोसा और आत्मविश्वास जगाने का प्रतीक भी है। उनका कहना है कि जब महिलाएं वर्दी में दिखाई देती हैं तो अन्य महिलाओं में भी आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा पैदा होती है। महिला सुरक्षा के लिए पुलिस लगातार जनसंवाद, मोहल्ला मीटिंग और आत्मरक्षा प्रशिक्षण जैसे कार्यक्रम चला रहे हैं, जिससे महिलाओं और किशोरियों को जागरूक और सक्षम बनाया जा सके। उन्होंने आगे कहा कि मेरे लिए पुलिस की वर्दी हमेशा प्रेरणा का स्रोत रही है, जब कोई महिला वर्दी में दिखाई देती है तो कई महिलाओं को उससे उम्मीद बंधती है कि वह उनके लिए कुछ बेहतर कर सकती है। समाज में लंबे समय तक महिलाओं को कई तरह की सामाजिक प्रथाओं और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। ऐसे में मुझे लगा कि महिलाओं को आगे आकर समाज में बदलाव लाने और उनकी समस्याओं के समाधान के लिए काम करना चाहिए। यही सोच मुझे पुलिस सेवा में लेकर आई।

समाज की सुरक्षा में देना चाहिए योगदान
महिलाओं को संदेश देते हुए उन्होंने कहा कि पुलिस सेवा समाज की सेवा करने का बड़ा अवसर देती है। यहां रहते हुए हम अपने आसपास के लोगों की मदद कर सकते हैं और उन्हें न्याय दिलाने में भूमिका निभा सकते हैं। इसलिए युवतियों को आगे आकर पुलिस सेवा में शामिल होना चाहिए, आत्मनिर्भर बनना चाहिए और समाज की सुरक्षा में योगदान देना चाहिए।

कड़ी मेहनत, ईमानदारी और खुद पर भरोसा हर महिला को सफलता देगा

देश की आबादी में 50 प्रतिशत महिलाएं हैं उनके स्वास्थ्य को लेकर आज तक कोई रिसर्च नहीं किया गया है। यह माना जाता है कि जो दवाई पुरुषों के लिए बनी है वहीं महिलाओं के लिए भी उपयोगी होगी। यह गलत है, क्योंकि महिलाओं और पुरुषों के शरीर में बहुत अंतर है। सामान्य तौर पर महिलाओं में प्रेगनेंसी होगी, ब्रेस्ट फीडिंग करवाना ही है। मगर इस दौरान उनके शरीर में बीपी या शुगर या अन्य बीमारी होती है, तो यह मान लिया जाता है कि बच्चा होने के बाद खत्म हो जाएगा। मगर ऐसा होता नहीं है। महिलाओं पर रिसर्च नहीं होता है, जो हमारी संस्था वुमन इन्वेंशन कार्डियोलॉजी कर रही है। हम वुमन पेसिफिक रिसर्च जनरल निकाल रहे हैं, जो दुनिया का पहला और एकमात्र जनरल है, जिसमें सिर्फ महिला रिसर्च को ही प्रमोट कर रहे हैं।



पहलाएं होती हैं। मैं भेदभाव की बात नहीं कर रही हूँ, आज 25 साल से इस फील्ड में हूँ, क्योंकि मेरे माता पिता ने मुझे खुले दिमाग के साथ कहा कि जो करना है करो। मैंने परवाह नहीं की और आज देश के कार्डियोलॉजी क्षेत्र की प्रतिष्ठित संस्था विनकास्ट की अध्यक्ष हूँ, आज हम वुमन इन्वेंशन कार्डियोलॉजी में महिलाओं पर रिसर्च कर रहे हैं और यंग वुमन कार्डियोलॉजीस्ट को आगे बढ़ा रहे हैं। उनको फेलोशिप दे रहे हैं। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच उपलब्ध करवा रहे हैं। इस बार हमारी संस्था विनकास्ट की आने वाले दिनों में इंदौर में ही कांफ्रेंस है, जिसमें देश-विदेश से कार्डियोलॉजी फील्ड की डॉक्टरों से आ रही है।

अपने आप पर विश्वास करो
डॉ सरिता राव ने कहा कि मैं महिलाओं को यह संदेश देना चाहती हूँ कि आप जिस भी क्षेत्र में जाना चाहती हैं, उसके लिए अपने आप पर विश्वास करो, दुनिया में कौन क्या बोल रहा है, उस पर ध्यान मत दो और कड़ी मेहनत और ईमानदारी से काम करो। आपकी पढ़ाई ही आपकी मेरिट तय करती है। मेरी राय में कड़ी मेहनत, ईमानदारी और खुद पर विश्वास एवं भरोसा का कोई तोड़ नहीं। तीनों के संगम से सफलता मिलना तय है, कोई रोक नहीं सकता है।